नामसंकीर्तनयोग : खण्ड १

नामजपका महत्त्व एवं लाभ

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

जून २०२३ तक सनातनके ३६२ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९३ लाख ८७ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

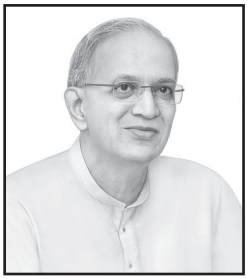

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे ८.७.२०२३ तक १२५ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशीजीका परिचय

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. 'नामसंकीर्तनयोग'का अर्थ ९

२. 'नामसंकीर्तन'के समानार्थी शब्द (नामजप, नामस्मरण, इ.) ९

३. 'जप' शब्दके अर्थ एवं प्रकार ९

४. नामजपके विषयमें भ्रान्तियां १०

५. नामकी विशेषताएं १०

* वेदोंका उद्गमस्थान नाम १०
* नामके विषयमें आए विकल्प नामके द्वारा ही दूर होना ११
* 'नामजप करना' अर्थात 'सर्वस्व देना' १२
* नामका रूप लघु; अपितु प्रभाव अत्यन्त व्यापक १२
* नाम साधन एवं साध्य, दोनों होना १२

६. नामजपका तत्त्व १२

* मायाके प्रति आसक्ति घटानेके लिए नामजप आवश्यक १२
* अनामीका (ईश्वरका) नामजप करनेकी आवश्यकता १२

७. नामजपका महत्त्व १३

* भगवानके रूपकी अपेक्षा उनका नाम महत्त्वपूर्ण १५

* भगवानके नामजपसे उनके प्रति प्रेम उत्पन्न होना १७

* सभीके लिए सुलभ ऐसी बन्धनरहित साधना १७

* 'नाम' सदाचारी एवं पापी, सभीका तारक होना १८

* जीवन्मुक्तिके लिए भी नाम जपना आवश्यक २२

८. नामजपके लाभ २२

* शरीरशास्त्रकी दृष्टिसे लाभ २३

* नामजप ही सर्व रोगोंपर उपचार ! २४

* वासना और दुःख समाप्त करनेके लिए नामजप करें ! २५

* मानसशास्त्रकी दृष्टिसे लाभ २५

* मनोविकारोंपर उपचार * मनकी एकाग्रता बढना २५

* अध्यात्मशास्त्रकी दृष्टिसे लाभ २७

* नामसे दुःखोंके निवारण होनेका कारण २८

* नामजपसे जन्मकुंडलीमें वर्णित द्वादश स्थानोंकी शुद्धि होना २९

* नामजपमें रुचि उत्पन्न होना एवं चित्तशुद्धि होना ३१

* नामजपसे पाप एवं पुण्य समाप्त होना ३३

* अनेक तीर्थों एवं यज्ञोंका फल केवल नामजपसे प्राप्त होना ३८

* नामजपसे देवताके प्रति श्रद्धा एवं भाव निर्मित होना ३९

* नामजपसे ईश्वरसे एकरूप हो पाना / अद्वैत साध्य होना ४३

* नामजपसे मृत्युके उपरान्त भी लाभ ४४

९. नामजप एवं अन्य योगमार्गोंकी तुलना ४५

卐 नामजप, देवता आदि संबंधी कुछ आलोचनाएं व उनका खण्डन ६४

ईश्वरका केवल एक नाम सभी धर्मशास्त्रोंका आधार है । उसके नामकी महिमाका वर्णन करनेमें वेद भी असमर्थ हैं । यह नाम ही कलियुगका धर्म है और यही हमें भवसागरसे पार करेगा ।

ऐसी भजनपंक्तियोंके माध्यमसे नामका महत्त्व हमारे गुरु सन्त भक्तराज महाराजजीने वर्णित किया है । सन्त तुकाराम, ब्रह्मचैतन्य गोंदवलेकर महाराज, सन्त कबीर जैसे सन्तोंने भी नामका महत्त्व बताया है । इसपर भी अनेक लोगोंके मनमें यह शंकारूपी सन्देह रहता है कि, छोटी-सी नामरूपी नौकासे अथाह भवसागर पार कर ईश्वरको कैसे प्राप्त किया जा सकता है । नामके बिना ईश्वरकी अनुभूति नहीं होती और बुद्धिको यह बात समझ नहीं आती, तबतक नामजप करना सम्भव नहीं होता । इसकारण अनेक लोग नामजप किए बिना ही यह निष्कर्ष निकालते हैं कि, 'नामजपमें कुछ नहीं रखा है ।' नामसे सम्बन्धित सर्व शंकाओं और सन्देह को विराम देने तथा ईश्वरकी सर्वश्रेष्ठ विभूति नामकी अद्वितीयता सबके ध्यानमें आए, इस हेतु यह ग्रन्थलेखन किया गया है । इस ग्रन्थमें दिए हुए सर्व सूत्र, उदा. नाम अर्थात वेदोंका भी उत्पत्तिस्थान, नाम सदाचारी और पापी सबका तारक, किसी भी साधनाकी पूर्णताके लिए नाम आवश्यक, जीवन्मुक्त व्यक्तिके लिए भी नाम आवश्यक, यह पढकर नामके विषयमें श्रद्धा बढनेमें निश्चित ही सहायता होगी ।

नामजपसे शारीरिक और मानसिक रोग ठीक होना, मनकी एकाग्रता बढना, दुःखोंका निवारण होना, सर्व पापोंका नाश होना, मृत्युके पश्चात भी लाभदायक होना इत्यादि विविध स्तरोंपर होनेवाले लाभोंके विषयमें इस ग्रन्थमें विवेचन किया गया है । ईश्वरप्राप्ति करनेके कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग, ज्ञानयोग इत्यादि साधनामार्ग हैं । इस ग्रन्थको पढनेपर ध्यानमें आएगा कि दैनिक जीवनकी भाग-दौडमें व्यस्त सर्वसामान्य सांसारिक लोगोंको आचरणमें सरल, शुचिता, स्थल-काल आदि बन्धनोंसे रहित एवं ईश्वरसे निरन्तर आन्तरिक सान्निध्य साध्य करवानेवाला, अर्थात साधना अखण्ड जारी रखनेवाला, एकमात्र साधनामार्ग नामयोग ही कैसे है । इससे ध्यानमें

आएगा कि 'नामका रूप लघु; अपितु प्रभाव अत्यन्त व्यापक' ऐसी 'नामसाधना' करना प्रत्येकके लिए कितना आवश्यक है । इस ग्रन्थमें वर्णित नामका महत्त्व पढकर नामसाधना आरम्भ करनेकी प्रेरणा पाठकोंको मिले, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना । – **संकलनकर्ता**

'अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमालाके सर्व खण्डोंकी संयुक्त भूमिका 'धर्मका मूलभूत विवेचन' नामक ग्रन्थमें दी है ।

उचित नामजपद्वारा उन्नतिका मार्ग दिखानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

नामजप कौनसा करें ?

- जनसामान्यके लिए 'ॐ'का जप कठिन क्यों ?
- साधनाके आरम्भमें कुलदेवताका नाम क्यों जपें ?
- गुरुद्वारा दिए गए नामजपका महत्त्व क्या है ?
- प्रकृतिके अनुसार विविध देवताओंका नामजप कैसे करें ?
- गुरु और सन्तों के नामका नामजप क्यों नहीं करना चाहिए ?

आनन्दप्राप्ति हेतु सनातनका साधनासम्बन्धी ग्रन्थ !

आधुनिक विज्ञानसे श्रेष्ठ अध्यात्म !

(अध्यात्मसम्बन्धी अनुचित धारणाओंके समाधानसहित)

भावजागृति हेतु उपयुक्त सनातनका लघुग्रन्थ **प्रार्थना** (महत्त्व एवं उदाहरण)